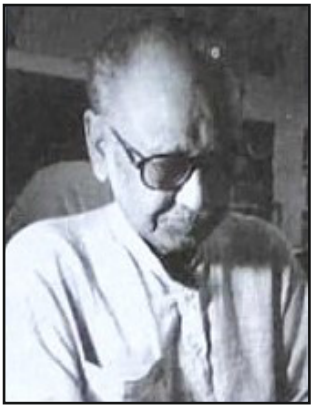

लोककला के मर्मज्ञ: श्री विजय वर्मा को भावभीनी श्रद्धांजलि

श्री विजय वर्मा, भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS) के एक वरिष्ठ अधिकारी और राजस्थान की समृद्ध लोक संस्कृति के गहन अध्येता के रूप में अपनी पहचान स्थापित करने वाले व्यक्ति थे। उनके जीवन और कार्यों में एक अनोखी समग्रता थी, जहाँ उन्होंने प्रशासनिक दायित्वों के साथ-साथ सांस्कृतिक धरोहरों को सहेजने और उन्हें जीवंत रखने का उल्लेखनीय कार्य किया। 18 जून 2024 को जयपुर में उनका स्वर्गवास हो गया, और उनके जाने से भारतीय प्रशासनिक सेवा और सांस्कृतिक जगत में एक गहरी शून्यता पैदा हो गई।

विजय वर्मा का नाम राजस्थान की सांस्कृतिक धरोहरों और लोक कलाओं के संरक्षक के रूप में सदैव याद किया जाएगा। वे न केवल भारतीय प्रशासनिक सेवा के एक वरिष्ठ अधिकारी थे, बल्कि राजस्थान की लोक संस्कृति, मंदिर स्थापत्य शिल्प और लोक कलाओं के पारखी जानकार भी थे। उनकी गहरी सांस्कृतिक समझ और जुड़ाव ने उन्हें केवल एक सफल प्रशासक तक सीमित नहीं रखा, बल्कि एक ऐसे संवेदनशील संस्कृति प्रेमी के रूप में स्थापित किया, जो अपनी मिट्टी की खुशबू को गहराई से महसूस करता था।

विजय वर्मा का जन्म राजस्थान के चित्तौड़ क्षेत्र में हुआ था, और यह भूमि उनके व्यक्तित्व और उनकी रुचियों को गहराई से प्रभावित करती रही। चित्तौड़ का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक वैभव, विशेषकर वहां की तुर्रा-कलंगी तथा भवाई 'लोकनाट्य परंपरा', विजय वर्मा के हृदय के बहुत करीब थी। तुर्रा-कलंगी लोकनाट्य, राजस्थान की पारंपरिक गायन और नाट्य कला की एक अनोखी विधा है। इस कला ने वर्मा जी के भीतर इतनी गहरी छाप छोड़ी कि वे इस धरोहर को सहेजने और उसे नए आयाम देने के लिए प्रयासरत रहे।

वर्मा जी ने अपने प्रशासनिक दायित्वों से आगे बढ़कर इस सांस्कृतिक धरोहर को बढ़ावा देने का निश्चय किया। इसी क्रम में, उन्होंने जवाहर कला केंद्र, जयपुर में चित्तौड़ के तुर्रा अखाड़ा का दल आमंत्रित किया और 'रूप बसंत' नामक लोकनाट्य का भव्य मंचन करवाया। इससे तुर्रा-कलंगी की परंपरा को एक नए मंच

पर पहचान मिली। इतना ही नहीं, उन्होंने चित्तौड़ में तुर्रा और कलंगी के कलाकारों के लिए कार्यशाला का भी आयोजन करवाया, जिससे इन कलाकारों को अपनी कला में और निखार लाने का अवसर मिला। विजय वर्मा ने यह सुनिश्चित किया कि लोक कला की परंपराएं केवल अतीत का हिस्सा न बनें, बल्कि वे आज के आधुनिक समय में भी अपनी प्रासंगिकता बनाए रखें। उनका मानना था कि लोक कलाएं हमारे समाज की जड़ों से जुड़ी हुई हैं, और उन्हें संरक्षित करने का कार्य समाज के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

विजय वर्मा का बीकानेर संभाग से विशेष लगाव था। बीकानेर की धूल और हवा में बसे लोकगीतों, लोकनाट्यों और मंदिरों की भव्यता ने उनके हृदय को बार-बार बीकानेर की ओर खींचा। चूरू और बीकानेर क्षेत्र की लोक कलाओं से जुड़े कलाकारों के साथ उनका गहरा संवाद था। वे न केवल इन कलाकारों की कला का आदर करते थे, बल्कि उनके व्यक्तिगत जीवन और स्वास्थ्य की भी जानकारी लेते रहते थे। उनकी इस संवेदनशीलता ने उन्हें कलाकारों और जनता के बीच अत्यधिक प्रिय बना दिया।

वर्मा जी की विद्वता और गहन सांस्कृतिक दृष्टि का एक प्रमाण तब मिला, जब उन्होंने हिंदी विश्व भारती संस्थान, बीकानेर में इतिहास के सुप्रसिद्ध विद्वान स्व. डॉ. दशरथ शर्मा की स्मृति में व्याख्यान दिया। उनका यह व्याख्यान इतिहास के प्रति उनकी गहरी समझ को दर्शाता था। यह बीकानेर में उनका अंतिम सार्वजनिक आगमन था, और इसके बाद उनका बीकानेर आना नहीं हुआ। हालांकि बीकानेर से उनकी शारीरिक दूरी बढ़ गई थी, लेकिन उनका आत्मीय सम्बन्ध इस सांस्कृतिक नगरी से कभी कम नहीं हुआ। वे अपने अंतिम समय तक पत्रिका के प्रधान संपादक, आदरणीय डॉ. गिरिजा शंकर शर्मा के संपर्क में रहे। उनके बीच का संवाद न केवल साहित्यिक और सांस्कृतिक था, बल्कि गहरे व्यक्तिगत संबंध का प्रतीक भी था।

विजय वर्मा ने न केवल एक कुशल प्रशासक के रूप में अपनी पहचान बनाई, बल्कि एक संवेदनशील और जागरूक संस्कृति प्रेमी के रूप में भी अमिट छाप छोड़ी। उनका जीवन एक प्रेरणा है कि किस प्रकार व्यक्ति अपने प्रशासनिक और सांस्कृतिक दायित्वों का समान रूप से निर्वहन कर सकता है। उनके जाने से राजस्थान और भारत की लोक संस्कृति में एक शून्यता अवश्य आई है, परंतु उनके योगदान और प्रेरणाएं सदैव जीवित रहेंगी।

संपादक